घोर तपस्वी, अवधूत, मौनी दयानन्द योगी के तपोबल से संसार का अज्ञानान्धकार छिन्न-भिन्न हुआ। (पृष्ठ २३)

अहिंसा-सिद्ध अवधूत योगी दयानन्द मगर मच्छ से स्नेह मुद्रा में (पृष्ठ ३२)

अपघ्नन्तो ऽ रावणः ॥ वेद

नाना साहब के बिठूर के महलों के विध्वस आैर बाघेरों की वीरता के साक्षात्,-कर्ता सन् ५७ की क्रान्ति के सूत्रधार दयानन्द (पृष्ठ ११४)

बलमसि बलम्मयि धेहि । वेद

डूबतों का परित्राणकर्ता बाल ब्रह्मचारी योग साधक दयानन्द यति (पृष्ठ १०४,१०५)
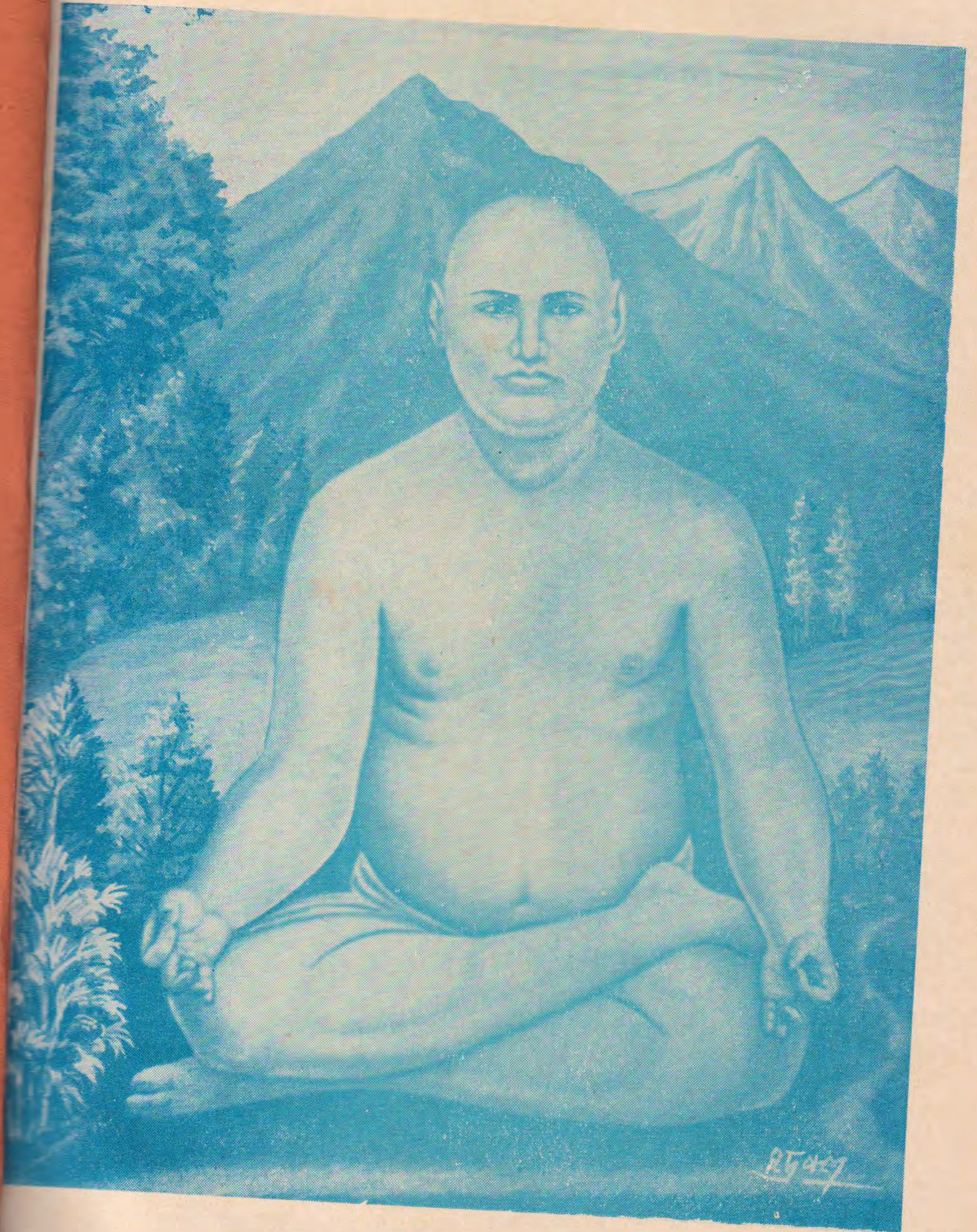
योगेश्वर महर्षि दयानन्द सरस्वती

❀ योगी का आत्म-चरित्र ❀

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।वेद
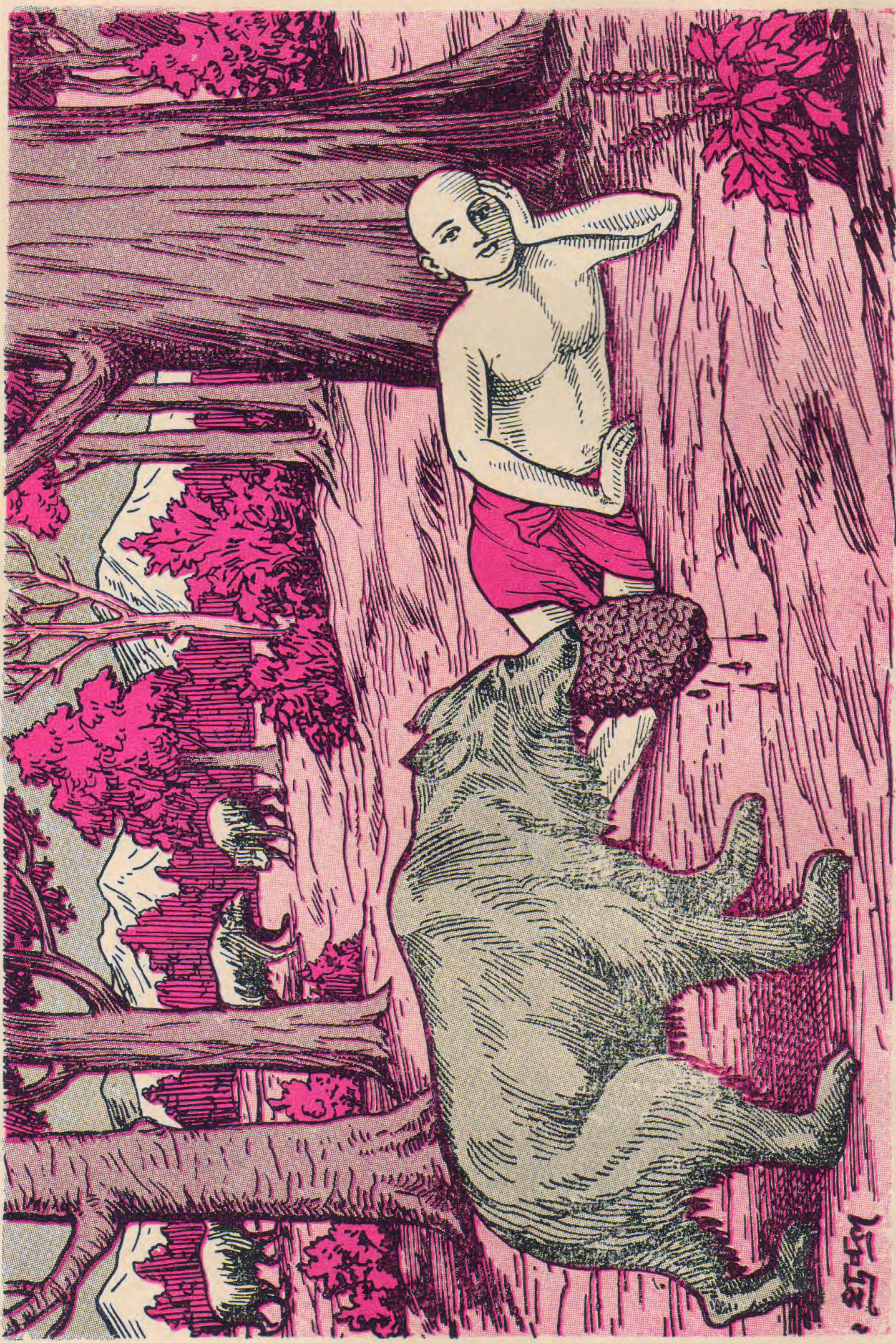
यति दयानन्द के लिये भालु मधु से परिपूर्ण छत्ता छोड़ रहा है। (पृष्ठ ४२)
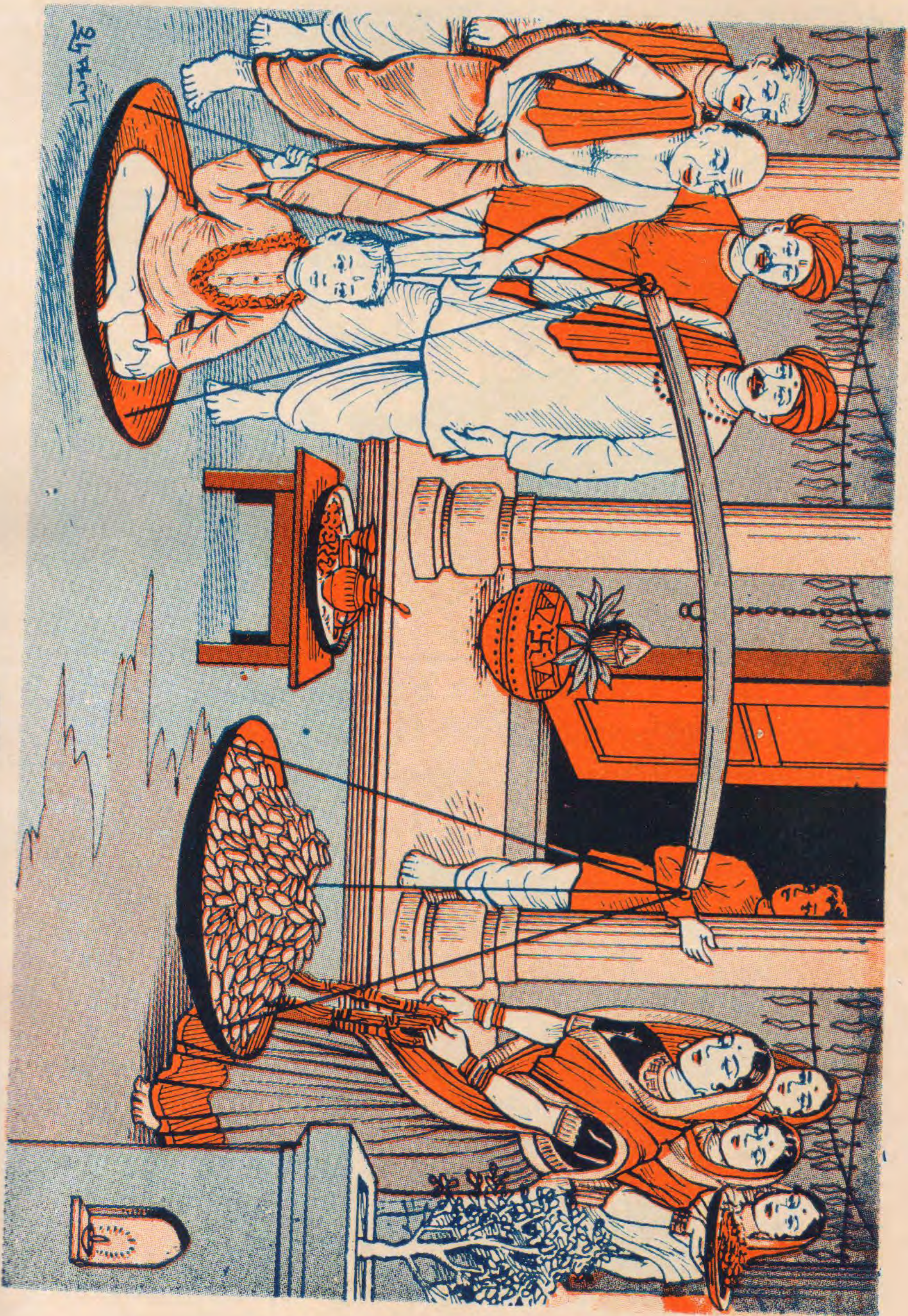
शिशु दयानन्द का स्वर्ण-रजत तुलादान

(पृष्ठ ११)
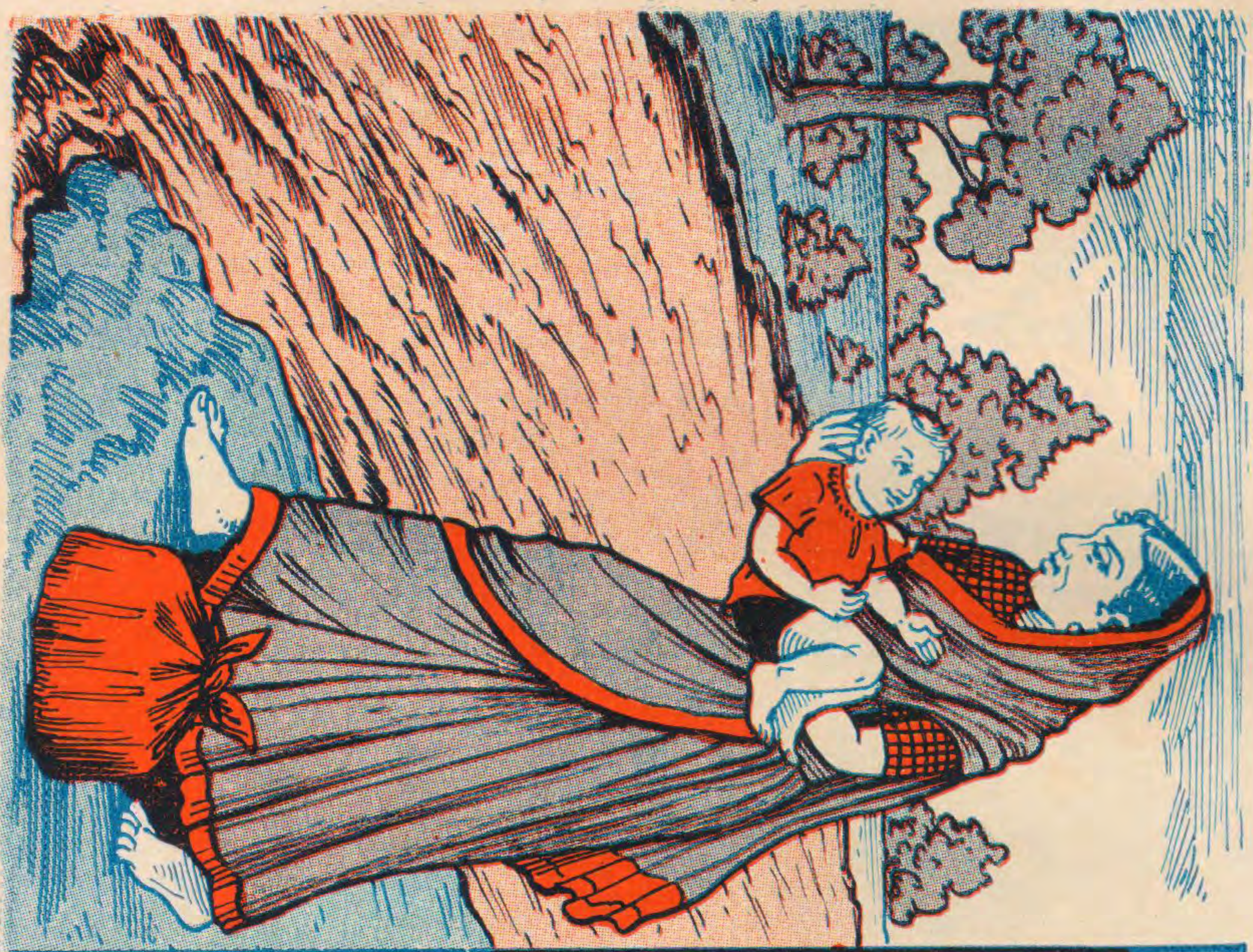
नदी में प्रवाह्यमान शिशु दयानन्द मुस्का दिया

शिशु दयानन्द की मुस्कान से विक्षिप्त धाया (पृष्ठ १२)

वारङ्गा नाला पर काल भैरव को नर-बलि

नर-बलि के लिये उपहृत ब्राह्मण बालक व ब्राह्मणी के परित्राणार्थ आत्म-बलिदान के लिये दयालु दयानन्द की दयार्द्रता।

(पृष्ठ ४१)
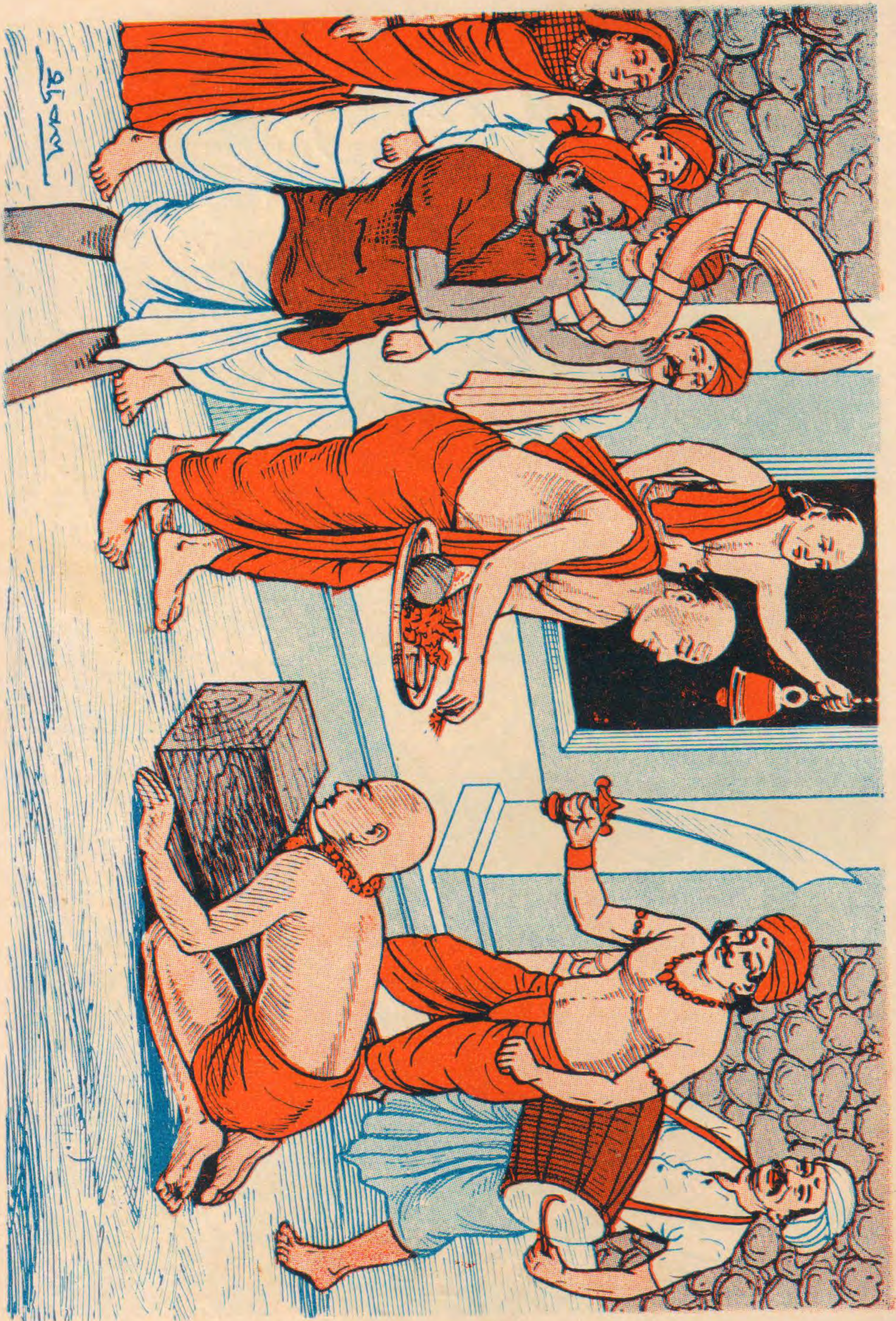
आत्म-बलि के लिये तत्पर देवदूत दयालु दयानन्द योग-यात्री (पृष्ठ ४०)

माता रुद्राणां पिता वसूनां० । वेद ।

ईश प्रणिधानी, योगी दयानन्द को दूध पिला कर ही गोमाता घर लोटी । (पृष्ठ १०३)

सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥ वेद
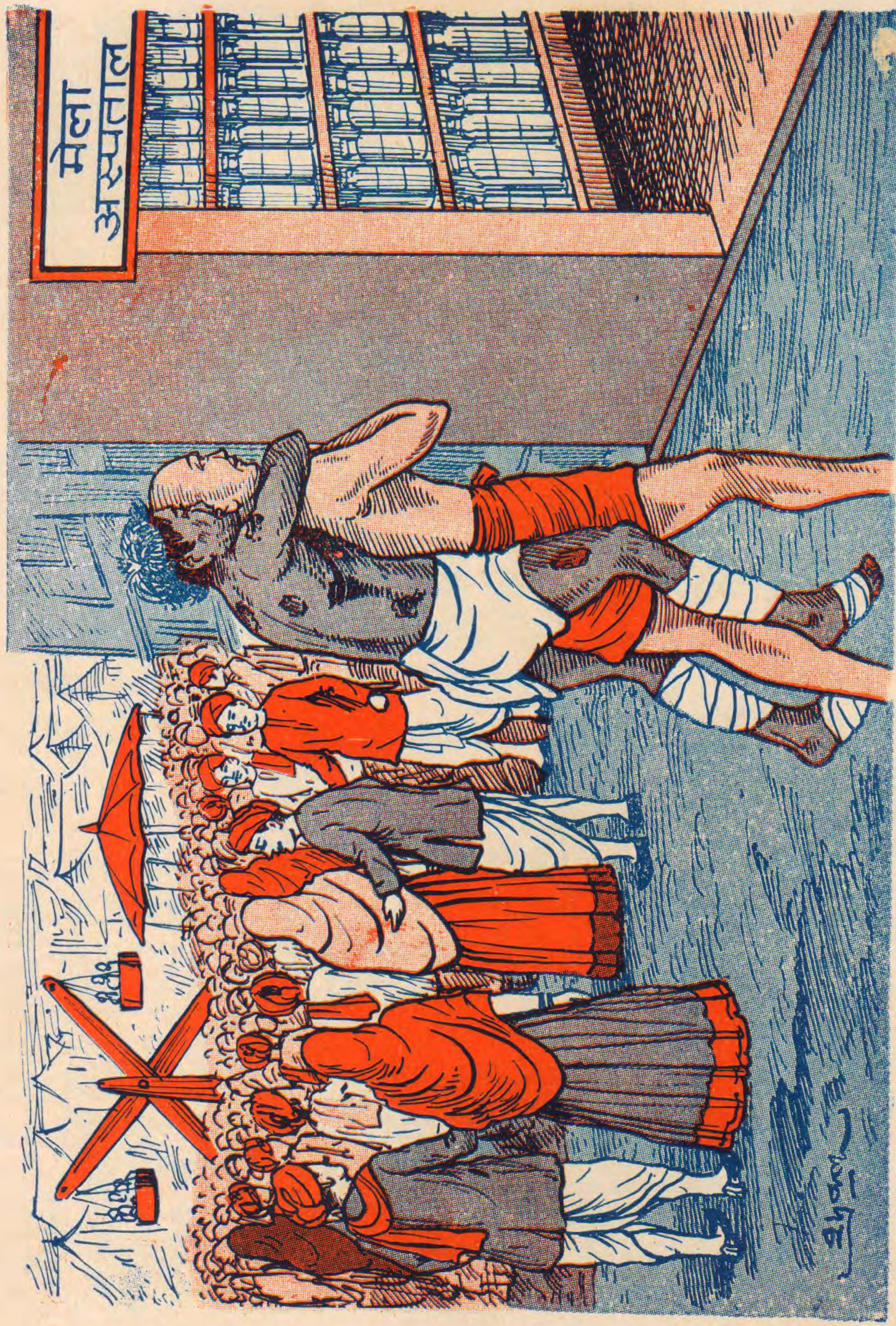
कोढ़ी के परित्राता योग साधक युवा दयानन्द

(पृष्ठ १०४)
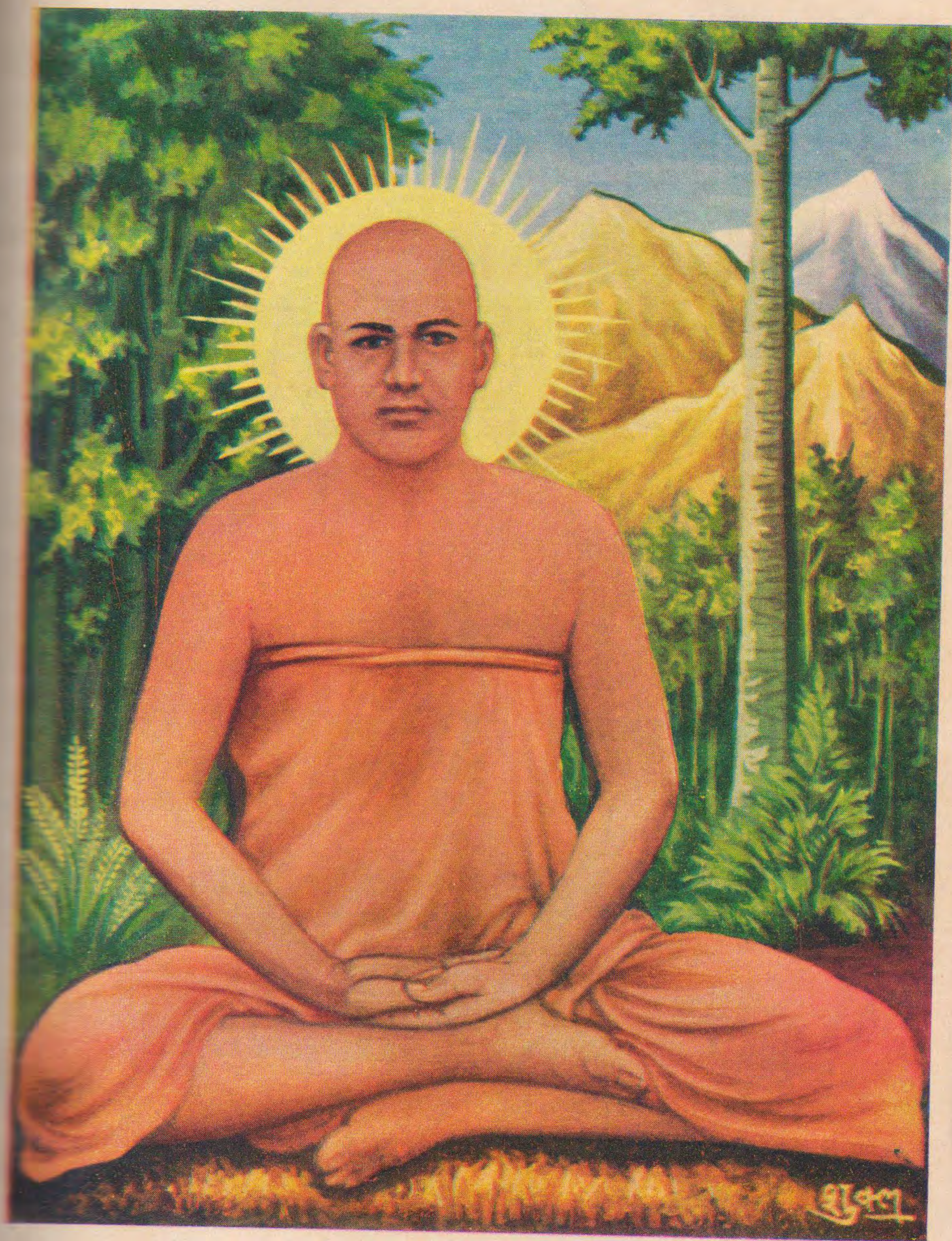
योगेश्वर महर्षि दयानन्द

सन् ५७ की क्रान्ति के होता नाना परिवार के गुरु
आत्मचरित्र उपदेष्टा

योगेश्वर भगवान् कृष्ण

महाभारत युद्ध के होता अर्जुन के गुरु
गीता-उपदेशक